

# मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2370 • उदयपुर, रविवार 20 जून, 2021

• प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया



**समाचार-जगत्**  
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें



**सेवा-जगत्**  
मानवता का प्रतीक, आपका सेवा संस्थान



## साल के आखिर तक आएगा एपल का आइओएस-15

एपल ने वर्ल्डवाइड डेवलपर्स कॉन्फ्रेंस 2021 में आइओएस 15 में अहम अपडेट्स की घोषणा की है। इनके इस साल के अंत तक जारी होने की उम्मीद है। इसका बीटा वर्जन अगले कुछ हफ्तों में आ जाएगा।

एपल ने घोषणा की है कि आइफोन 6 और उसके बाद के आइफोन आइओएस 15-अपडेट्स के योग्य होंगे। साथ ही आइपॉड टच (7वीं पीढ़ी) भी आइओएस 15 के उपयुक्त होंगे।

**आसानी से मिलेगा फोन :** अब आप अपने खाए हुए आइफोन की आसानी से ऑफलाइन भी खोज सकेंगे। अगर कोई आपका आइफोन चुराता है तो इसका एक्टिवेशन लॉक इसे लॉक और लोकेटेबल रखेगा।

**रिडिजायन नोटिफेशन :** आइओएस 15 में नोटिफिकेशन में उपलब्ध होने पर फोटो भी दिखाया जाएगा। साथ ही एप्स के आइकन भी बड़े दिखाए जाएंगे। साथ ही बैच में नोटिफिकेशन समरी भी दिखाई जाएगी। जिससे आप गैरजरूरी मैसेज से परेशान न हों।

**लाइव टैक्सट :** अब आप

अपने आइफोन को किसी नम्बर पर पॉइंट करेंगे तो आइफोन इसे पहचानेगा और फोन एप को खोल देगा। एपल इसके लिए डिवाइस की इंटेलेजेंस के प्रभाव को बढ़ा रहा है। इसके साथ ही यह टैक्सट, फोटो, दृश्य आदि को भी पहचानेगा।

**टैब व्यू में सफारी :** एपल सफारी अब टैब व्यू में होगी। इससे टैब्स को पहचानने और बदलने में आसानी रहेगी। ब्राउजर के कंट्रोल को नीचे लाया गया है। जिससे एक हाथ से ही उन तक पहुंचना आसान होगा। इसके साथ ही एपल ने पहली बार सफारी के साथ मोबाइल वेब एक्सटेंशन सपोर्ट को जोड़ा है।

**फेसटाइम :** आप एंड्रायड और विंडोज डिवाइस वाले मित्रों से भी फेसटाइम कॉल कर सकेंगे। हालांकी फेसटाइम कॉल करने के लिए आपको एपल डिवाइस ही काम में लेनी होगी।

**फोकस :** आइओएस 15 में डू नॉट डिस्टर्ब के साथ तीन नए मोड पर्सनल, वर्क और स्लीप भी जोड़े गए हैं। पर्सनल और वर्क मोड में आप चुनिंदा एप्स को एनेबल कर सकेंगे। इससे आपका फोकस काम पर ही रहेगा।



## नारायण सेवा द्वारा सिरौही में 62 गरीब परिवारों को राशन दिया

नर को नारायण का स्वरूप मानते हुए असहाय, दिव्यांग, मूक बधिर एवम् दूसरी लहर कोरोना महामारी के चलते बेरोजगार हुए गरीब कामगारों को नारायण सेवा संस्थान उदयपुर की शाखा सिरौही द्वारा निःशुल्क राशन का वितरण किया गया। जिसमें पूरे भारतवर्ष में 50000 परिवारों को राशन निःशुल्क जा रहा है। सिरौही के अंतर्गत 62 गरीब परिवारों को निःशुल्क राशन दिया गया। सिरौही शाखा संयोजक अदाराम जी भाटिया ने बताया कि श्री कैलाश जी सुथार संरपच झाड़ोली ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र सिंह जी ने संस्थान गतिविधियों का अवलोकन किया।

संस्थापक चैयरमैन कैलाश जी 'मानव' ने बताया कि संस्थान 36 वर्षों से दीन-दुःखियों की निःस्वार्थ सेवा कर रहा है। इस वर्ष कोरोना काल में संस्थान घर-घर भोजन सेवा, ऑक्सीजन सिलेंडर, एम्बुलेंस सेवा, कोरोनाकिट, निःशुल्क हाइड्रोलिक बेड भी उपलब्ध करवाने का संकल्प लिया इस दौरान हजारों कोरोना

संक्रमित को निःशुल्क सेवा उपलब्ध करवायी जा रही हैं। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि संस्थान ने ऐसे जरूरतमंदों के लिए नारायण गरीब परिवारों तक राशन पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

इसी क्रम में उदयपुर शहर के विभिन्न आदिवासी क्षेत्र में शिविर लगाकर निःशुल्क राशन वितरण किया जा रहा है। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, 5 किलो चावल, 4 किलो दाल, 2 किलो तेल, 2किलो शक्कर, 1 किलो नमक एवं आवश्यक मसाले दिए गए। सिरौही आश्रम की पूरी टीम ने चयनित परिवारों को राशन वितरण में सहयोग प्रदान किया।



## अंतहीन संभावनाएं - दिव्यांगता राहत के विभिन्न आयाम

### चिकित्सा

- निदान (एक्स रे, ओपीडी, लैब)
- उपचार (कृत्रिम अंग और कैलीपर्स)
- पोस्ट ऑपरेटिव केयर (वार्ड, आईसीयू)
- चिकित्सा सहायता (फार्मसी एवं फिजियोथेरेपी)

### स्वावलम्बन

- हस्तकला या शिल्पकला
- सिलाई प्रशिक्षण
- डिजिटल (कंप्यूटर) प्रशिक्षण
- मोबाइल फोन मरम्मत प्रशिक्षण
- नारायण चिल्ड्रन एकेडमी (निःशुल्क डिजिटल स्कूल)

### सशक्तिकरण

- दिव्यांग शादी समारोह
- दिव्यांग हीरोज
- दिव्यांग खेल अकादमी
- दिव्यांग संगोष्ठी - सेमीनार
- इंटरनेशनल वॉलंटियर

### सामुदायिक सेवाएं

- आदिवासी और ग्रामीण शिक्षा
- वस्त्र वितरण
- दृश्य एवं श्रवण बाधित के लिए आवासीय विद्यालय
- भोजन सेवा
- राशन वितरण
- वस्त्र और कंबल वितरण
- दवा वितरण



● 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पिटल ● 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त ● प्रज्ञाचक्षु, विमदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों का निःशुल्क आवासीय  
● निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी ● निःशुल्क कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला ● व्यावसायिक प्रशिक्षण ● बस स्टैण्ड से मात्र 700 मीटर दूर ● रेलवे स्टेशन से 1500 मीटर दूर

### दूसरों की भावनाओं का करें आदर

कहा जाता है कि बचपन में डाले गए संस्कार जीवन भर बरकरार रहते हैं। कुछ लोगों की शुरु से ही घर और बाहर सब पर अपना रौब जमाने की आदत पड़ जाती है। बचपन में ही उनकी हर जिद को महत्व दिया जाता है और वे अपनी हर बात मनवा लेते हैं। ऐसा ज्यादातर लाड के कारण होता है और उनकी यह आदत भावी जीवन में सब पर आधिपत्य जमाने की बन जाती है, वे हरेक रिश्ते पर अपना रौब जमाना चाहते हैं।

वे चाहते हैं कि घर में केवल उनकी ही बात को माना जाए, उनके सामने दूसरे व्यक्ति की इच्छा और भावनाओं का कोई महत्व नहीं होता है। ऐसे लोगों के साथ रहने वाले लोगों को अपनी जिन्दगी घुटन भरी महसूस होती है, ऐसे लोग किसी दूसरे का विचार सुनने का भी प्रयास नहीं करते, जहां उनकी नहीं चलती, वे कुदृते और भुनभुनाते हैं और साथ रहने वालों का उनके साथ संबंध मजबूरी का होता है। लेकिन दूसरों पर आधिपत्य जमाने, अपना प्रभाव स्थापित करने वाले व्यक्ति को कभी न कभी इस आदत के कारण जोखिम अवश्य उठाना पड़ता है। ऐसे लोग केवल इस बात से प्रसन्न रहते हैं कि उनकी हर बात मानी जा रही है, घर में उनका राज है, लेकिन वे ये नहीं जानते कि उनका अपने रिश्तों से संबंध आपसी समझबूझ और प्यार का ना होकर एक समझौता बन गया है। वे एक-दूसरे से अपने सुख-दुख नहीं बांट पाते। अगर पति और पत्नी में पत्नी का स्वभाव 'डॉमिनेटिंग' होता है तो पति उसकी हर बात बिना किसी विरोध के मानता जाता है क्योंकि पति जानता है चलनी तो पत्नी की है, यह सोचकर वह उसे कोई सलाह नहीं देता और दोनों के बीच वास्तविक निर्भरता समाप्त हो जाती है।

ऐसे लोगों की बात डर से मानते हैं न कि इज्जत के कारण, क्योंकि न मानने से परिणाम कलह ही होगा। ऐसे लोग बात-बात पर टोका-टाकी करते रहते हैं जैसे कि ऐसे कपड़े क्यों पहने, सब्जी ऐसी क्यों बनाई, लाइट बंद क्यों नहीं की, ये सामान यहां क्यों रखा आदि। कुछ महिलाएं अपने डॉमिनेट स्वभाव के कारण पति से बिना पूछे हर काम करती हैं, क्योंकि वे स्वयं को उससे अक्लमंद मानती हैं।

कई बार जब वो बड़ी भूल कर जाती है और उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है तब उन्हें गलती का एकसास होता है। संयुक्त परिवारों में सास अपनी उम्र, अपने तजुबे के बड़प्पन के कारण घर के सभी सदस्यों पर अपना रौब जमाकर रखती है।

### मन की शुद्धि

वाणी की शुद्धि अलग है और मुंह की शुद्धि अलग है। वाणी की शुद्धि व्याकरण से होती है, जबकि मुंह की शुद्धि नीम की दातौन आदि से हो जाती है। जीवन में दोनों शुद्धियां अनिवार्य हैं, वचन शुद्धि और मुख शुद्धि। इसी तरह हम अपने शरीर की शुद्धि जल से कर लेते हैं, लेकिन हम अपने चित्त को, मन को पानी से साफ नहीं कर सकते।

मन की शुद्धि के लिए योग जरूरी है। योग के बिना हमारा चित्त शुद्ध नहीं हो सकता। आदमी शरीर की शुद्धि तो कर रहा है, लेकिन मन की शुद्धि का काम नहीं कर रहा है। धर्म दर्शन कहता है कि 'मैं' अर्थात् आत्मा को भूल

जाओ और 'मैं' को याद भी रखो। दूसरे के सामने 'मैं' अर्थात् अहं को भूल जाओ और अपने लिये 'मैं' को याद रखो। आज का विज्ञान पर का शोध करना सिखलाता है, जबकि भेद-विज्ञान सरल ज्ञान 'स्व' की खोज करना सिखलाता है। स्व की खोज ही आत्मा की शोध है। जो व्यक्ति स्वयं मलिन है, दुनिया को निर्मलता का बोध नहीं दे सकता। जिसका मन अशुद्ध है, वह शांति का अनुभव नहीं कर सकता। मन को सबसे पहले शुद्ध करो। आपके वस्त्र शुद्ध है, आपका शरीर शुद्ध है, लेकिन वस्त्रों की शुद्धि मात्र से मन की शुद्धि होने वाली नहीं है। यदि हम शांति चाहते हैं, तो हमको अपने मन को शुद्ध करना चाहिए।

### सबसे सुखी

बुद्ध एक बार पाटलिपुत्र पहुँचे। उनके विहार में प्रतिदिन अनेक लोग उनसे मिलने और अपनी श्रद्धा अर्पित करने आते थे। उनके साथ चर्चा होती थी, प्रवचन भी होता था। कई आगंतुक सिर्फ बुद्ध के उपदेश सुनने के लिए आते थे, कई लोग अपने मन की उलझनों के बारे में भी उनसे पूछते थे, बुद्ध उनका समाधान करते थे।

एक दिन बुद्ध की उस सभा में सम्राट, अमात्य, सेनापति व भद्रसेन भी मौजूद थे। प्रवचन के बाद आनंद ने एक प्रश्न किया, भंते, सुख क्या है? यहां सबसे सुखी कौन है?

बुद्ध क्षण भर मौन रहे और उपस्थित भद्रजनों की ओर देखा। उनके उत्तर की प्रतीक्षा में सभा में सन्नाटा छाया रहा। भक्तजन सोचने लगे कि बुद्ध अवश्य राजा, अमात्य या किसी नगर श्रेष्ठि की ओर इंगित करेंगे। परंतु बुद्ध ने सबसे पीछे एक कोने में बैठे फटेहाल, कृशकाय व्यक्ति की ओर संकेत कर कहा, वह..... सबसे अधिक सुखी वह है। भक्तजन चकित रह गए। इतने धनी और वैभव संपन्न लोगों के बीच भला यह फटेहाल

व्यक्ति कैसे सुखी रह सकता है। दुविधा और बढ़ गई। तब बुद्ध ने लोगों की जिज्ञासा को देखते हुए स्वयं एक प्रश्न किया कि आप सब अपनी-अपनी जरूरतों के बारे में बताएं। सभी ने अपनी-अपनी जरूरतें बताईं। अंत में फटेहाल व्यक्ति की भी बारी आई। उससे भी पूछा कि तुम्हारी क्या-क्या जरूरतें हैं। यदि कभी पाने का अवसर मिले तो क्या पाना चाहोगे?

उसने कहा, कुछ भी नहीं। फिर भी आपने पूछा है, तो कहूंगा कि मुझमें ऐसी चाह पैदा हो कि, मन में और कोई चाह पैदा ही न हो।

क्यों? क्या तुम्हें नए वस्त्र और धन नहीं चाहिए? आनंद ने पूछा। नहीं, मेरी आवश्यकताएं इतने से पूरी हो जाती हैं, उसने कहा।

उपस्थित जनों को समाधान मिल गया, व्यक्ति, धन, वैभव, वेशभूषा आदि से सुखी नहीं होता। सुख व्यक्ति के भीतर रहता है और जिस व्यक्ति के भीतर प्यास है, और पाने की चाह है, महात्वाकांक्षा है—वह भला कैसे सुखी हो सकता है।

**सम्पादकीय**

जीवन कितना लम्बा और है? यह कौन जान सका है? फिर व्यामोह के पाश में स्वयं को क्यों आबद्ध करूँ? क्यों कल की चिंता में डूबा रहूँ? क्यों आज के आनंद से वंचित रहूँ? परमात्मा ने प्रकृति की रचना करके असंख्य प्रकार के जीव बनाए हैं।

आश्चर्य है कि अधिकतर जीवों में से कल की कोई चिंता में नहीं रहता है। यह बात ठीक है कि मनुष्य को बुद्धि एवं विवेक मिला है तो वह त्रिकाल विचार कर सकता है।

करना भी चाहिए, पर किसका? होना तो यह चाहिए कि हम भूतकाल में मिली असफलताओं से सीखते रहें। वर्तमान को सुधारें, भविष्य स्वयं सुखद हो जाएगा। हमें यदि भावी की चिंता करनी है तो यही करनी चाहिये कि जिस उद्देश्य से परमात्मा ने हमें बनाया, यह यदि छूट रहा है तो भविष्य में उसकी प्राप्ति में की चिंता करे। भौतिकवादी चिंता बस चिंता है, मानवतावादी चिंता तुरंत चिंतन में बदल जाती है, तो चिंता में क्यों उलझें, चिंतन को ही अपनायें।

**कुछ काव्यमय**

सेवा ज्योति प्रकट भई,  
तो भागे तमकार।  
वही मनुज होता सफल,  
वही करे ललकार॥  
जिस जीवन का ध्येय हो,  
करना बस उपकार।  
वो ही समझा मान लो,  
मानव जीवन सार॥  
पीड़ा में कोई पड़ा,  
नहीं मुझे संताप।  
इससे बढ़कर है कहाँ,  
इस धरती पर पाप॥  
जो परपीड़ा पिघलता,  
वो सच्चा इंसान।  
हर कोई ऐसा बने,  
क्यों कोई नादान।  
करुणा की नदियां बहे,  
जिस मानव के मांय ।,  
उसको प्रभु भी प्रेम दे,  
शरणागति पा जाय॥

- वस्तीचन्द्र राव, अतिथि सम्पादक

**अपनों से अपनी बात**

**सेवा भगवत्कार्य**

नन्हा मुन्हा बालक टाबर,  
नंग घंडगा डोले रे।

कुण तो वांका दुःखड़ा सूं बोले रे॥

बात है संस्था के असहाय सहायता शिविर की। उदयपुर की सुन्दर झीलों की छवि, सुन्दर भवन, बाग-बगीचों की, रमणीय नगरी के समाप्त होते ही मात्र 15 किमी. की दूरी पर सेवा की गाड़ी जा रही थी हमेशा की अपने सिर पर 30-40 किलो लकड़ियों का बोझ लिए आदिवासी बालक उम्र लगभग 12-13 वर्ष की। अपने पेट की भूख को मिटाने के लिए शहर की ओर लकड़ियां लिए आ रहा था। शरीर पर मैल की मोटी परत। कपड़े के नाम पर रसोई में पीछे के काम में लिए जाने वाले कपड़े से भी मैली फटी-पुरानी कमीज, नंगे पांवों की दशा में दुर्बल शरीर को संभालते हुए शहर की ओर आ रहा था। उसके पतले-पतले कांपते पैरों से यूं लग रहा था जैसे लकड़ी की भारी अब गिरी-अब गिरी। मेरे मुंह से निकला "उफ" कितने जल रहे होंगे इसके -नंगे पैर?



तभी पास बैठे एक सज्जन बोल उठे- "इनकी तो आदत पड़ गई है- दुःख जैसी कोई बात नहीं।"

क्या वास्तव में आदत पड़ गई है? क्या वास्तव में ही इन्हें तकलीफ नहीं होती? नहीं नहीं यह तो इनकी मजबूरी है। शरीर तो इनका भी वैसा ही है -जैसा है हमारा। कांटे तो इनके पैरों में भी वैसे ही चुभते हैं, जैसे बिना जूतों के हमारे। सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख, भूख-प्यास की अनुभूति तो इन्हें भी बराबर होती ही है -भाई साहब।

**सोच का अन्तर**



इंसान क्या नहीं कर सकता? अगर इंसान ठान ले तो वो जो चाहे, वो कर सकता है। संसार में इस बात के जीवन्त प्रमाण भरे हुए हैं। महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानन्द, डॉ. कलाम, सचिन तेंदुलकर, लता मंगेशकर आदि वो शख्सियतें हैं, जिन्होंने अपनी सोच के दम पर साधारण मनुष्यों से अलग अपनी पहचान बनाई। ये भीड़ से अलग वो नायाब हीरे हैं, जिनकी सोच मुश्किलों में भी सकारात्मक बनी रही है। ये अपमान को भी एक चुनौती के रूप में स्वीकार करते हैं।

किसी आश्रम में एक संत और उनका शिष्य रहते थे। एक दिन गाँव के किसी सेठ ने शिष्य को गाय दान दी। वह गाय लेकर आश्रम पहुँचा और अपने गुरु से कहा -गुरुदेव, गाँव के एक सेठ ने आज आश्रम के लिए एक गाय दान द है।

शिष्य की बात सुनकर संत ने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया-बहुत अच्छी बात है। अब प्रतिदिन आनन्दपूर्वक दूध पीयेंगे। शिष्य अत्यन्त प्रसन्न हो गया। अब प्रतिदिन गुरु-शिष्य गाय के दूध का आनन्द लेने लगे। कुछ दिन पश्चात् वह सेठ आश्रम आया और अपनी गाय वापस लेकर चला गया। इस बात पर शिष्य अत्यन्त दुःखी हो गया। वह सोचने लगा कि अब मुझे प्रतिदिन गाय का शुद्ध व ताजा दूध नहीं मिलेगा। गाय थी तो दूध का आनन्द था। अपने मन की व्यथा लेकर वह अपने गुरु के पास गया और कहा -गुरुवर, वह सेठ आज आश्रम आया और अपनी गाय वापस लेकर चला गया। अब हमें दूध कैसे मिलेगा?

और ध्यान बराबर उस बच्चे पर रहा जब तक वो आँखों से ओझल न हो गया। मन से एक आवाज आई "शायद हमारे हृदय की संवेदना ही कहीं खो गई है -हृदय की करुणा ही समाप्त हो चुकी है। अन्तर की रस गगरी खाली हो रही हैं।"

आइए, भगवत् कार्यों से जुड़कर कुछ चिंतन-मनन कर पूछें अपने को कि कहीं हमारे साथ तो यह नहीं हो रहा है? ऐसा कि मन की संवेदना ही शून्य हो जाये नहीं-नहीं। आप और हम तो ऐसा नहीं होने देंगे। किसी जरूरतमंद गरीब, असहाय दुःखी, प्राणी को देखकर आपश्री के पांव रूकेंगे-हाथ उठेंगे सेवा के लिए और अंतः से बरसेगा स्नेह ! आइये करुणा सागर प्रभु से करें (प्रार्थना) -

**बंद न कर देना  
अपने घर के दरवाजे,  
पता नहीं कब कोई  
पाहुन घर आये।  
रिक्त न कर देना  
अंतर की रस गगरी,  
पता नहीं कब कोई  
प्यासा स्वर आये।।**

-कैलाश 'मानव'

शिष्य की बात सुनकर गुरु तनिक भी व्यथित और दुःखी नहीं हुए। उन्होंने शांत मन से सहजतापूर्वक अपने शिष्य से कहा-कोई बात नहीं। खुशी की बात है कि अब हमें गाय का गोबर नहीं उठाना पड़ेगा। गाय की साफ-सफाई इत्यादि की भी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। वे संत अपने शिष्य की तरह गाय के चले जाने एवं दूध न मिलने से दुःखी नहीं हुए, बल्कि उन्होंने शिष्य के दूध नहीं मिलने की दुःख वाली बात में भी खुशी की किरण ढूँढ ली थी। यह होती है संतों की प्रवृत्ति।

इस प्रकार महापुरुष नकारात्मकता को नहीं देखते। वे अच्छाई वाला पक्ष देखते हैं। वे सिक्के के हैड वाले पहलू का ही विचार करते हैं, टैल का नहीं। ऐसे लोग अपनी सकारात्मक तरंगों से अपने प्रभाव क्षेत्र में आने वाले हर नकारात्मक व्यक्ति को भी सकारात्मक बना देते हैं। इनकी सकारात्मक सोच ही इन्हें असाधारण व्यक्तित्व का धनी बनाती है, जो कि साधारण मनुष्य में नहीं होती। साधारण मनुष्य और महापुरुष में बस सोच का ही अन्तर होता है।

- सेवक प्रशान्त भैया

**जरूरत से ज्यादा चाह हमेशा दुख देती है**

कभी-कभी जरूरत से ज्यादा धन भी घर-परिवार में अशांति फैला देता है। धन का अपना स्वभाव है, वह सीमित मात्रा में मिलता रहें, जरूरत के काम पूरे होते रहें तो कभी परेशानी नहीं आती। एक गांव में एक सेठ और बढ़ई पड़ोसी थे। सेठ बड़ा पैसे वाला था लेकिन उसे कोई संतान नहीं थी। उसके घर में केवल पत्नी और बूढ़ी मां थी। इतना धनवान होने के बाद भी उसके घर में शांति नहीं थी। वे दोनों अक्सर झगड़ते रहते थे। वही दूसरी और बढ़ई के घर में उसकी पत्नी और दो बच्चे थे, वे गरीब थे मगर बड़े प्रेम से रहते थे, एक दिन सेठानी ने सेठ को अपने पास बुलाया और बढ़ई के घर में झांकते हुए कहा कि ये लोग गरीब है मगर फिर भी कितने खुश हैं। सेठ ने पत्नी से कहा कि संतोषी को झोपड़ी भी महल लगती है।

सेठ ने सेठानी को समझाने के लिए एक उपाय किया। सेठ ने अगले दिन पैसों से भरी पोटली बढ़ई के घर में फेंक दी। जब बढ़ई ने सेठ से पूछा ये पोटली तुम्हारी है तो सेठ ने साफ इंकार कर दिया। बहुत दिनों के इंतजार के बाद बढ़ई ने सोचा कि इतने पैसों का क्या किया जाए। उसकी पत्नी का दिमाग घूमने लगा। उसने पति को समझाते हुए कहा कि इन पैसों को हम अपनी बेटियों की शादी के लिए रख लेते हैं लेकिन बढ़ई राजी न था, बस अब क्या था बढ़ई के घर में रोज झगड़े होने लगे। अब उनके मन में पहले की तरह संतोष न था। सेठ ने सेठानी से कहा कि जब इनके पास पैसे नहीं थे, तब ये लोग कितने संतोष पूर्वक रहा करते थे पैसों से भरी पोटली मिलने के बाद इनकी जिंदगी में क्लेश हो रहा है।

